

गजराज और मूषकराज

प्राचीन काल में एक नदी के किनारे बसा नगर व्यापार का केन्द्र था। फिर आए उस नगर के बुरे दिन, जब एक वर्ष भारी वर्षा हुई। नदी ने अपना रास्ता बदल दिया।

लोगो के लिए पीने का पानी न रहा और देखते ही देखते नगर वीरान हो गया अब वह जगह केवल चूहों के लायक रह गई। चारों ओर चूहे ही चूहे नजर आने लगे। चूहों का पूरा साम्राज्य ही स्थापित हो गया। चूहों के उस साम्राज्य का राजा बना मूषकराज चूहा। चूहों का भाग्य देखो, उनके बसने के बाद नगर के बाहर जमीन से एक पानी का स्रोत फूट पड़ा और वह एक बड़ा जलाशय बन गया। नगर से कुछ ही दूर एक घना जंगल था। जंगल में अनगिनत हाथी रहते थे। उनका राजा गजराज नामक एक विशाल हाथी था। उस जंगल क्षेत्र में भयानक सूखा पड़ा। जीव-जन्तु पानी की तलाश में इधर-उधर मारे-मारे फिरने लगे। भारी भरकम शरीर वाले हाथियों की तो दुर्दशा हो गई।

हाथियों के बच्चे प्यास से व्याकुल होकर चिल्लाने व दम तोड़ने लगे। गजराज खुद सूखे की समस्या से चिंतित था और हाथियों का कष्ट जानता था। एक दिन गजराज की मित्र चील ने आकर खबर दी कि खंडहर बने नगर के दूसरी ओर एक जलाशय हैं। गजराज ने सबको तुरंत उस जलाशय की ओर चलने का आदेश दिया। सैकड़ों हाथी प्यास बुझाने झोलते हुए चल पड़े। जलाशय तक पहुंचने के लिए उन्हें खंडहर बने नगर के बीच से गुजरना पड़ा। हाथियों के हजारों पैर चूहों को रौंदते हुए निकल गए। हजारों चूहे मारे गए। खंडहर नगर की सड़कें चूहों के खून-मांस के कीचड़ से लथपथ हो गई। मुसीबत यहीं खत्म नहीं हुई। हाथियों का दल फिर उसी रास्ते से लौटा। हाथी रोज उसी मार्ग से पानी पीने जाने लगे।

काफी सोचने-विचारने के बाद मूषकराज के मंत्रियों ने कहा “महाराज, आपको ही जाकर गजराज से बात करनी चाहिए। वह दयालु हाथी हैं।”

मूषकराज हाथियों के वन में गया। एक बड़े पेड़ के नीचे गजराज खड़ा था। मूषकराज उसके सामने के बड़े पत्थर के ऊपर चढ़ा और गजराज को नमस्कार करके बोला “गजराज को मूषकराज का नमस्कार। हे महान हाथी, मैं एक निवेदन करना चाहता हूँ।”

आवाज गजराज के कानों तक नहीं पहुंच रही थी। दयालु गजराज उसकी बात सुनने के लिए नीचे बैठ गया और अपना एक कान पत्थर पर चढ़े मूषकराज के निकट ले जाकर बोला “नन्हें मियां, आप कुछ कह रहे थे। कृपया फिर से कहिए।” मूषकराज बोला “हे गजराज, मुझे चूहा कहते हैं। हम बड़ी संख्या में खंडहर बनी नगरी में रहते हैं। मैं उनका मूषकराज हूँ। आपके हाथी रोज जलाशय तक जाने के लिए नगरी के बीच से गुजरते हैं। हर बार उनके पैरों तले कुचले जाकर हजारों चूहे मरते हैं। यह मूषक संहार बंद न हुआ तो हम नष्ट हो जाएंगे।”

गजराज ने दुख भरे स्वर में कहा “मूषकराज, आपकी बात सुन मुझे बहुत शोक हुआ। हमें ज्ञान ही नहीं था कि हम इतना अनर्थ कर रहे हैं। हम नया रास्ता ढूँढ लेंगे।”

मूषकराज कृतज्ञता भरे स्वर में बोला “गजराज, आपने मुझ जैसे छोटे जीव की बात ध्यान से सुनी। आपका धन्यवाद। गजराज, कभी हमारी जरूरत पड़े तो याद जरूर कीजिएगा।”

गजराज ने सोचा कि यह नन्हा जीव हमारे किसी काम क्या आएगा। सो उसने केवल मुस्कराकर मूषकराज को विदा किया। कुछ दिन बाद पड़ोसी देश के राजा ने सेना को मजबूत बनाने के लिए उसमें हाथी शामिल करने का निर्णय लिया। राजा के लोग हाथी पकड़ने आए। जंगल में आकर वे चुपचाप कई प्रकार के जाल बिछाकर चले जाते हैं। सैकड़ों हाथी पकड़ लिए गए। एक रात हाथियों के पकड़े जाने से चिंतित गजराज जंगल में घूम रहे थे कि उनका पैर सूखी पत्तियों के नीचे छल से दबाकर रखे रस्सी के फंदे में फंस जाता है। जैसे ही गजराज ने पैर आगे बढ़ाया रस्सा कस गया। रस्से का दूसरा सिरा एक पेड़ के मोटे तने से मजबूती से बंधा था। गजराज चिंघाड़ने लगा। उसने अपने सेवकों को पुकारा, लेकिन कोई नहीं

आया।कौन फंदे में फंसे हाथी के निकट आएगा? एक युवा जंगली भैंसा गजराज का बहुत आदर करता था। जब वह भैंसा छोटा था तो एक बार वह एक गड्ढे में जा गिरा था। उसकी चिल्लाहट सुनकर गजराज ने उसकी जाअन बचाई थी। चिंघाड़ सुनकर वह दौड़ा और फंदे में फंसे गजराज के पास पहुंचा। गजराज की हालत देख उसे बहुत धक्का लगा।

वह चीखा “यह कैसा अन्याय है? गजराज, बताइए क्या करूं? मैं आपको छुड़ाने के लिए अपनी जान भी दे सकता हूं।”

गजराज बोले “बेटा, तुम बस दौड़कर खंडहर नगरी जाओ और चूहों के राजा मूषकराजा को सारा हाल बताना। उससे कहना कि मेरी सारी आस टूट चुकी हैं।”

भैंसा अपनी पूरी शक्ति से दौड़ा-दौड़ा मूषकराज के पास गया और सारी बात बताई। मूषकराज तुरंत अपने बीस-तीस सैनिकों के साथ भैंसे की पीठ पर बैठा और वो शीघ्र ही गजराज के पास पहुंचे। चूहे भैंसे की पीठ पर से कूदकर फंदे की रस्सी कुतरने लगे। कुछ ही देर में फंदे की रस्सी कट गई व गजराज आजाद हो गए।

सीख: आपसी सदभाव व प्रेम सदा एक दूसरे के कष्टों को हर लेते हैं।

गणराज और भुवकराज

प्राचीन काल में एक नदी के किनारे महा नगर वृषार का केंद्र था। द्विज मुनि उभ नगर के वृद्ध पिता, एक एक वृद्ध हारी वृद्ध करी। नदी ने अपना रास्ता बदल दिया।

लोगों के लिए पीने का पानी न रहना और टोपड़े की टोपड़े नगर वीरान हो गया। मुनि वरुण से कहकर केवल मुझे के लायक रह गरी। पारों और मुझे की मुझे नएर मुने लगे। मुझे का पूरा माभ्राष्ट्र की भूपिउ हो गया। मुझे के उभ माभ्राष्ट्र का राज महा भुवकराज मुने। मुझे का हाथ टोपड़े, उनके गभने के गद नगर के गदर एभीन में एक पानी का भुंउ दूर परा और वरुण एक महा एलामय मन गया। नगर में कुल की दूर एक भना एंगल था। एंगल में मनगिनउ का भी रहते थे। उनका राज गणराज नामक एक विमल का भी था। उभ एंगल बड़े में रुचानक भाषा परा। सीव-एत्रु पानी की उलाम में उपर-उपर भार-भारें द्विजने लगे। हारी हरकभ मरीर वाले काषिथे की उे मुने दे गरी।

काषिथे के गभे प्रथम में वृकुल देकर गिल्लाने व दभउदने लगे। गणराज मुने मुने की मभ्रा में गिउउ था और काषिथे का कष्ट रहता था। एक दिन गणराज की भिउ गील ने मुकर पदर की कि पंचरु गने नगर के दमरी और एक एलामय है। गणराज ने मग के उरुंउ उभ एलामय की और गलने का मुनेम दिया। मैकर का भी प्रथम गणने देलउे का गल परे। एलामय उक पंउउने के लिए उने, पंचरु गने नगर के गीउ में गुणराज परा। काषिथे के रुदरे पौर मुने के गेउउे का निकल गया। रुदरे मुने भारे गया। पंचरु नगर की मरुके मुने के पुन-भाम के कीउरु में लघपघ हो गरी। भुमीगउ बनीं पदु नलीं करी। काषिथे का दल द्विज उभी राभु में लीए। का भी रेए उभी भाज में पानी पीने एने लगे।

काजी भेउने-विपारने के गद भुवकराज के भंडिथे ने कहा “भुवकराज, मुपके की एकर गणराज में गउ करनी पाकिया। वरु दयालु का भी है।”

भुवकराज काषिथे के वन में गया। एक गठे पेरु के नीचे गणराज परा था।

भुवकराज उभके माभने के गठे पदुर के उपर गद और गणराज के नभभूर करके गेला “गणराज के भुवकराज का नभभूर। दे भुवन का भी, मैं एक विवेदन करना पाऊउे करूँ।”

मुने गणराज के कानें उक नलीं पंउउे रनी थी। दयालु गणराज उभकी गउ मुने के लिए नीचे गे गया और अपना एक कान पदुर पर गद भुवकराज के निकल ले एकर गेला “नचै, भियां, मुप कुल कर रहे थे। कृपया द्विज में ककिया।”

भुवकराज गेला “हे गणराज, भुने मुने करुउे है। रुभ गरी माप्रा में पंचरु गनी नगरी में रहते है। मैं उनका भुवकराज है। मुपके का भी रेए एलामय उक एने के लिए नगरी के गीउ में गुणराज है। कर गार उनके पौर उले कुगले एकर रुदरे मुने भारे है। यह भुवक भंकर गद न रुमु उे रुभ नक्ष है एरंगे।”

गणराज ने द्वाप हरे धूर में कहा “भुवकराज, मुपकी गउ मुने भुने गदु मेक रुमु। रुभे हन की नलीं था कि रुभ उउना मुने कर रहे है। रुभ नया राभु द्वा लैगो।”

भुवकराण कुडळुडा छरे भुर मे गेला “गणराण, सुपने भुर लैमे छेटे एवी की गउ प्रान मे भुनी। सुपका पुनृवाट। गणराण, कही रुभारी एकरउ पके उे वाट एकर कील्लाराग।”

गणराण ने भेया कि वरु नरु एवी रुभारे किभी काम कृ माराग। मे उभने केवल भुभुराकर भुवकराण के विटा किया। कुळ टिन गउ पके भी टिम के गउ ने मेन के भएगुउ गनने के लिए उभमे काषी माभिल करने का निरुध लिखा। गउ के लेग काषी पकरने मारा। एंगल मे मुकर वे एपयाप करे प्रकार के रल ठिळाकर गले एउे कै। मैकके काषी पकरु लिए गरा।

एक गउ काषिये के पकरु एने मे गिंटिउ गणराण एंगल मे भुभुरु के घे कि उनका पेर भुपी पडिये के नीठे कल मे टगाकर रापे रभी के टरे मे टम एउे कै। लैमे की गणराण ने पेर मुगे गडावा रभु कभ गवा। रभुका टुभरा भिरा एक पेर के भेटे उने मे भएगुडी मे गंण वा। गणराण िठभाउने लगा। उभने सुपने मेवके के प्रकार, लेकिन केरे नली मुया। के न टरे मे टमे काषी के निकए माराग? एक युवा एंगली हैभा गणराण का गउउे मुट्टर करउ वा। एग वरु हैभा छेए वा उे एक गउ वरु एक गउ मे ए गिरा वा। उभकी गिल्लाए भुनकर गणराण ने उभकी रसन गारां थी। िठभाउं भुनकर वरु टेरु उर टरे मे टमे गणराण के पाभ पकेगा। गणराण की कालउ टाप उमे गउउे एक्क लगा।

वरु गीपा “वरु कैभा मनुष्य कै? गणराण, गउउर कृ कं? मै सुपके कुरने के लिए सुपनी एन ही टि मकउां कं।”

गणराण गेले “गेए, उभगम टेरुकर पंरुकर नगरी एउ उर मुके के गउ भुवकराण के भारा काल गउना। उभमे करुना कि मेरी भारी मुभ एए मुकी कै।

हैभा सुपनी प्री मक्ति मे टेरु-टेरु भुवकराण के पाभ गवा उर भारी गउ गउरां। भुवकराण उरंउ सुपने गीम-डीम, मैनिके के भाष हैमे की पी० पर गेा उर वे मीपू की गणराण के पाभ पकेगा। मुके हैमे की पी० पर मे कुटकर टरे की रभी कुउरने लगे। कुळ की टेर मे टरे की रभी कए गरें व गणराण मुट्टर के गरा।

भीप: सुपभी मट्टराव व पेभमटा एक टुभरे के कर्षे के कर लेउे कै।

मनुवाट - पूरु राहु